उत्तर-पृष्ठ

परमेश्वर की सर्वोत्तम भेंट

आई सी आई युनिवर्सिटी

(इन्टरनेशनल कोरेसपान्डेन्स इन्स्टीट्यूट)

पोस्ट बेग नं. 1, एन्ड्रयूज गंज

नई दिल्ली-110 049

(कृपया साफ अक्षरों में लिखें)

आपका नाम.....

पता.....

.....

.....

प्रान्त.....पिन कोड.....

उम्र.....व्यवसाय.....

धर्म.....तारीख.....

महत्त्वपूर्ण

यह आपके 'उत्तर-पृष्ठ' हैं। कृपया इन्हें सावधानीपूर्वक खींचकर बाहर निकाल लें और इन्हें भरकर ऊपर दिए गए पते पर भेजें।

उत्तर पृष्ठ

१. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें:
"यीशु" नाम का अर्थ है .....
यीशु का बपतिस्मा .....नदी में .....
बपतिस्मा देने वाले के द्वारा हुआ।
परमेश्वर ने कहा: "यह मेरा प्रिय ..... है।"

२. यीशु अपने लोगों का किससे छुटकारा करेंगे ?
.....क) रोमी राज्य से
.....ख) गरीबी तथा बीमारी से
.....ग) उनके पापों से

३. किस नाम का अर्थ है "अभिषिक्त किया गया" ?

४. यीशु क्योंकर बीमारों को चंगा कर सके ?
.....क) वह चंगाई करना जानता था।
.....ख) उसने दवाईयों का ज्ञान पाया था।
.....ग) चंगाई देने के लिए पवित्र आत्मा ने उसका अभिषेक किया था।

५. क्या यीशु सामरियों के मित्र थे ?
.....क) नहीं! सामरी अन्य जाति और विधर्मी थे।
.....ख) हां! यीशु सभी से प्रेम करते थे।
.....ग) नहीं! सामरी अधिक पापी थे।

६. क्या आपने यीशु में सच्ची शान्ति पाई ?
.....
क्या आप शान्ति पाना चाहते हैं ? ..... हां/नहीं

७. क्या धनी व्यक्ति ने सही चुनाव किया ?
.....

८. क्या आप अच्छे बनने से स्वर्ग में प्रवेश पा सकते हैं ?
.....

९. यीशु से पहले किस महान नबी ने परमेश्वर की व्यवस्था पाया ? .....

१०. मूसा के समान कौन नबी था ?

.....

११. किसकी व्यवस्था लोगों के कार्यों पर अधिक प्रभाव डालती है ?

.....

१२. किसकी व्यवस्था बतलाती है कि हम क्या हैं ?

.....

१३. यीशु ने कहा "तुम पृथ्वी के .....
और जगत की .....हो।"

१४. क्या परमेश्वर विचारों और इच्छाओं के लिए हमें उत्तरदायी ठहराता है ?

.....क) नहीं, व्यक्ति के विचार या इच्छा में कोई सहायता नहीं कर सकता।

.....ख) हां हमारे विचार और इच्छाएं कार्यों को कराते हैं।

१५. कौनसा जीवन न्याय के दिन स्थिर रहकर अनन्तकाल तक बना रहेगा ?

.....क) वह जो यीशु की शिक्षा का पालन करता है।

.....ख) वह जो स्वयं को प्रसन्न करता है।

.....ग) वह जो दूसरों को प्रसन्न करता है।

१६. रिक्त स्थानों को भरें:

यीशु ने .....कहा ताकि लोग
.....सच्चाई को समझें।

१७. छुटका पुत्र घर छोड कर क्यों गया ?

.....क) अच्छी नौकरी पाए।

.....ख) मानव की सेवा करे।

.....ग) अपनी इच्छा पूरी करे।

१८. वह घर क्यों लौट आया ?

.....क) और धन लेने को।

.....ख) पिता से क्षमा और नौकरी पाने को।

.....ग) शहर के बारे में बतलाने को।

१९. किनको परमेश्वर की क्षमा चाहिए ?

.....क) सबको, सबने पाप किया।
.....ख) केवल बुरे लोगों को।
.....ग जो शहर में रहते हैं।

२०. क्या आपने पाप किया ? क्या आप परमेश्वर की क्षमा चाहते हैं ?

.....

२१. यीशु के बैरी कौन थे ?
.....क) साधारण लोग।
.....ख) कुछ धार्मिक अगुवे।
.....ग) रोमी सरकार के अधिकारी।

२२. यूहन्ना ने यीशु का परिचय कैसे कराया
.....क) परमेश्वर का पुत्र।
.....ख) परमेश्वर का मेम्ना जो पापों को उठा ले जाता है।
.....ग) प्रतिज्ञा किया हुआ मसीह।

२३. किस चेले ने यीशु को पकडवाया ?

.....

२४. किस राज्यपाल ने यीशु का मुकदमा किया ?

.....

२५. राज्यपाल ने क्या कहा ?
.....क) मैं इसे दोषी पाता हूं।
.....ख) मैं इसमें दण्ड देने का कोई दोष नहीं पाता।
.....ग) मुकदमा समाप्त किया जाए।

२६. यीशु को किसने दफनाया ?
.....और.....

२७. यीशु ने कहा था कि कितने दिनों के बाद वह फिर जी उठेगा ?

.....

२८. हफ्ते के कौन से दिन यीशु फिर जी उठा ? .....

२९. कितने दिनों तक यीशु अपने चेलों को दिखाई देता रहा ?

.....

३०. यीशु ने चेलों को क्या प्रमाण दिया कि वह भूत नहीं था ?

.....क) उसके कहे शब्दों पर विश्वास करें।

.....ख) उनके साथ भोजन किया और अपने शरीर को छूने दिया।

.....ग) कोई प्रमाण नहीं दिया।

३१. थोमा ने यीशु को क्या कहा ?

.....

३२. यीशु की योजानानुसार सभी विश्वासी :

.....क) राजनीतिक राज्य बनाएं।

.....ख) केवल उद्धार का आनन्द पाएं।

.....ग) यीशु के गवाह बन जाएं

३३. यीशु के चेलों को उसके गवाह होने के लिए क्या आवश्यक है ?

.....क) पवित्र आत्मा की सामर्थ

.....ख) सरकार की अनुमति

.....ग) अच्छे गिर्जाघर

३४. यीशु स्वर्ग को कैसे गया ?

.....क) वह शरीर से ऊपर उठाया गया।

.....ख) वह अन्तरिक्ष यान में गया।

.....ग) वह अदृश्य हो गया।

३५. यीशु ने क्या भेजने की प्रतिज्ञा दी ?

.....क) चेलों के लिए ठहरें

.....ख) पवित्र आत्मा भेजें

.....ग) संसार पर राज्य करें

३६. १ थिस्सलोनीकियों ४:१६-१७ को पांच बार पढ़ें।

क्या आप यीशु के आने के लिए तैयार हैं? .....

आई॰सी॰आई॰ एसैम्बलीज ऑफ गॉड द्वारा चलाया जाता है।

कृपया इस "उत्तर पृष्ठ" को इन्टरनेशनल कारिसपोन्डेन्स इन्स्टीट्यूट को भेजें। हम इसे जांच कर आपको सुन्दर प्रमाण पत्र भेजे देंगे।

प्रिय आई.सी.आई विद्यार्थी,

जब आप इसे भेजें तो कृपया अपने मित्रों व रिशतेदारों का पता भी हमें भेज दीजिए ताकि हम उन्हें भी यह पाठ्यक्रम भेज सकें। आप अपना नाम व पूरा पता साफ-साफ बड़े अक्षरों में लिखा करें और जिस भाषा में आप चाहते हैं उस भाषा के नाम के नीचे लाइन खींच दीजिए ताकि हम आपको यह पाठ्यक्रम भेज सकें।

धन्यवाद।

नाम .....अंग्रेजी/हिन्दी

पता .....

.....

.....

नाम .....अंग्रेजी/हिन्दी

पता .....

.....

.....

नाम .....अंग्रेजी/हिन्दी

पता .....

.....

.....

नाम .....अंग्रेजी/हिन्दी

पता .....

.....

.....

नाम .....अंग्रेजी/हिन्दी

पता .....

.....

.....

नाम .....अंग्रेजी/हिन्दी

पता .....

.....

.....

ICI के पाठकों के अध्ययन हेतु परमेश्वर आपको आशीष दे। आपका मित्र

नोट : प्रत्येक उत्तर पृष्ठ पर अपना अनुक्रमांक अवश्य लिखें।

आई सी आई युनिवर्सिटी (आई.सी.आई.)

एसैम्बलीज ऑफ गॉड द्वारा चलाया जाता है।

परमेश्वर की सर्वोत्तम भेंट

यदि आपको इस पाठ 'यीशु के जीवन' से आनन्द मिला है, कृपया अपने शब्दों में लिखिये, इस अध्ययन से आपको क्या लाभ हुआ है।

अनुक्रमांक .....

आपका नाम .....

पता .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....